पाठ 37

1. परमेश्वर की पुस्तक, बाइबल में पहली पाँच पुस्तकें किसने लिखीं?

-मूसा ने।

2. मूसा को कैसे पता चला कि क्या लिखना है?

-परमेश्वर ने मूसा को वह लिखने के लिए निर्देशित किया जो परमेश्वर चाहता था कि वह लिखे।

3. जब इस्राएली मरुभूमि में से यात्रा कर रहे थे, तो उन्हें मार्ग कैसे पता चला?

-परमेश्वर ने उनका मार्गदर्शन किया।

4. परमेश्वर इस्राएलियों को कहाँ ले जा रहा था?

-परमेश्वर इस्राएलियों को कनान तक ले जा रहा था, जिस भूमि का उसने उनके पूर्वज इब्राहीम से वादा किया था।

5. जब इस्राएली कनान की सीमा पर पहुंचे, तो परमेश्वर ने मूसा से क्या करने को कहा?

-परमेश्वर ने मूसा से कहा कि वह बारह गोत्रों में से प्रत्येक में से एक व्यक्ति को चुने और भूमि का पता लगाए।

6. वे दस व्यक्ति जो परमेश्वर में विश्वास नहीं करते थे, कनान में प्रवेश क्यों नहीं करना चाहते थे?

-दस आदमी कनान में रहने वाले बड़े और शक्तिशाली लोगों से डरते थे।

-दस लोगों को विश्वास नहीं था कि कनान के लोगों को हराने के लिए परमेश्वर पर्याप्त शक्तिशाली थे।

-दस लोगों ने इस्राएलियों को कनान देश देने से परमेश्वर के वादे पर विश्वास नहीं किया।

7. कालेब और यहोशू कनान में क्यों प्रवेश करना चाहते थे?

-कालेब और यहोशू कनान में रहने वाले बड़े और शक्तिशाली लोगों से नहीं डरते थे।

-कालेब और यहोशू का मानना था कि कनान के लोगों को हराने के लिए परमेश्वर काफी शक्तिशाली थे।

-कालेब और यहोशू का मानना था कि परमेश्वर अपना वादा निभाएगा और इस्राएलियों को कनान देश देगा।

8. यदि हम परमेश्वर के संदेश पर विश्वास नहीं करते हैं, तो हम परमेश्वर को क्या कहते हैं?

-एक झूठा।

9. क्योंकि इस्राएलियों ने परमेश्वर पर विश्वास करने से इनकार कर दिया, केवल कनान में कौन प्रवेश करेगा?

-केवल कालेब, यहोशू और इस्राएलियों की सन्तान।

10. क्योंकि इस्राएलियों ने परमेश्वर पर विश्वास करने से इंकार कर दिया, परमेश्वर ने उन्हें कैसे दण्ड दिया?

-वे कनान में प्रवेश नहीं करेंगे।

-वे सब मरुभूमि में मरेंगे।

-क्योंकि इस्राएलियों ने परमेश्वर पर विश्वास करने से इनकार कर दिया, वे कनान में प्रवेश नहीं करते थे, लेकिन रेगिस्तान में घूमते थे।

-जब इस्राएली कादेश पहुंचे, तो वहां पानी नहीं था।

-आपको क्या लगता है इसराएलियों ने क्या किया?

आइए पढ़ें गिनती 20:1-5

1 पहिले महीने में सारी इस्राएली मण्डली सीन नाम मरुभूमि में पहुंची, और कादेश में ठहरी।

2 और मण्डली के लिये पानी न रहा, और लोग मूसा और हारून के साम्हने इकट्ठे हो गए।

3-वे मूसा से झगड़ने लगे, और कहने लगे, कि यदि हम तब मरते, जब हमारे भाई यहोवा के साम्हने मर जाते!

4-तू यहोवा की मण्डली को इस मरुभूमि में क्यों ले आया कि हम और हमारे पशु यहीं मर जाएं?

5-तू हमें मिस्र से इस भयानक स्थान पर क्यों ले आया? उसके पास कोई अनाज या अंजीर, अंगूर या अनार नहीं है। और पीने के लिए पानी नहीं है!"

-जब इस्राएलियों के पास पानी नहीं था, तो क्या उन्होंने परमेश्वर पर विश्वास किया कि वह उन्हें पानी देगा?

-नहीं।

-इस्राएलियों ने क्या किया?

- उन्होंने मूसा और हारून को दोषी ठहराया।

- जब इस्राएलियों के पास पानी नहीं था तो उन्हें क्या करना चाहिए था?

-उन्हें परमेश्वर से पानी देने के लिए कहना चाहिए था।

-अतीत में परमेश्वर ने उन्हें एक चट्टान से पानी दिया था।

-इस्राएलियों ने परमेश्वर से पानी देने के लिए क्यों नहीं कहा?

-क्योंकि वे परमेश्वर में विश्वास नहीं करते थे।

-आज, बहुत से लोग इस्राएलियों की तरह हैं।

-भले ही परमेश्वर बारिश देता है और मक्के को उगाता है, फिर भी बहुत से लोग उस पर विश्वास नहीं करते हैं।

- जब पानी नहीं था तो मूसा और हारून ने क्या किया?

आइए पढ़ें संख्या 20:6

6 और मूसा और हारून मण्डली से मिलापवाले तम्बू के द्वार पर जाकर मुंह के बल गिरे, और यहोवा का तेज उन्हें दिखाई दिया।

-मूसा और हारून ने ईश्वर में विश्वास किया।

-मूसा और हारून ने परमेश्वर से उन्हें पानी देने के लिए कहा।

-क्या मूसा और हारून इस्राएलियों को पानी दे सकते थे?

-नहीं।

-मूसा और हारून इस्राएलियों को पानी क्यों नहीं दे पाए?

-क्योंकि वे रेगिस्तान में थे।

-यदि परमेश्वर इस्राएलियों को जल नहीं देता, तो क्या होता?

-सभी इस्राएली मर जाएंगे।

-क्या परमेश्वर ने इस्राएलियों को पानी दिया?

आइए पढ़ें गिनती 20:7-8

7-यहोवा ने मूसा से कहा,

8- "लाठी ले, और तू अपके भाई हारून समेत मण्डली को इकट्ठा करना। उस चट्टान से उनकी आंखों के साम्हने बातें कर, और वह अपना जल उंडेल देगी। तू मण्डली के लिये चट्टान में से जल निकालेगा, कि वे और उनके पशु पी सकें।"

-क्योंकि परमेश्वर ने इस्राएलियों से प्रेम किया, उस ने उन्हें जल दिया।

-पानी लाने के लिए परमेश्वर ने मूसा को क्या करने की आज्ञा दी?

-परमेश्वर ने मूसा को एक चट्टान से बात करने की आज्ञा दी।

-अतीत में जब इस्राएलियों को पानी की आवश्यकता होती थी, तब परमेश्वर ने मूसा को एक चट्टान पर प्रहार करने की आज्ञा दी थी।

-अब, परमेश्वर ने मूसा को एक चट्टान से बात करने की आज्ञा दी।

-मूसा ने क्या किया?

आइए पढ़ें गिनती 20:9-11

9 इस प्रकार मूसा ने लाठी को यहोवा के साम्हने से ले लिया, जैसा उस ने उसको आज्ञा दी थी।

10 और उस ने और हारून ने मण्डली को चट्टान के साम्हने इकट्ठा किया, और मूसा ने उन से कहा, हे बलवाइयों, सुनो, क्या हम तुम्हारे लिये इस चट्टान में से जल निकालेंगे?

11 तब मूसा ने अपना हाथ उठाया और अपनी लाठी से चट्टान को दो बार मारा। पानी बह निकला, और समुदाय और उनके पशुओं ने पी लिया।

-क्या मूसा ने चट्टान से बात की?

-नहीं।

-मूसा ने क्या किया?

-उसने चट्टान पर दो बार प्रहार किया।

-मूसा ने चट्टान पर प्रहार क्यों किया?

-क्योंकि वह इस्राएलियों से क्रोधित था।

-क्या मूसा ने परमेश्वर की अवज्ञा की?

-हां।

-तब परमेश्वर ने मूसा और हारून से क्या कहा?

आइए पढ़ें संख्या 20:12

12 परन्तु यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, इसलिथे कि तू ने मुझ पर इतना भरोसा न किया, कि इस्त्राएलियोंके साम्हने मुझे पवित्र मान सके, इसलिथे इस मण्डली को उस देश में न ले आना जिसे मैं उन्हें देता हूं।

-क्योंकि मूसा और हारून ने चट्टान से बात नहीं की, बल्कि चट्टान को मारा, क्या परमेश्वर ने उन्हें दंडित किया?

-हां।

-परमेश्वर ने मूसा और हारून को कैसे दण्ड दिया?

-परमेश्वर ने उनसे कहा कि वे कनान देश में प्रवेश नहीं करेंगे।

-जब हारून के मरने का समय आया, तो परमेश्वर ने मूसा से कहा कि वह हारून को पास के पहाड़ की चोटी पर ले जाए।

आइए पढ़ें गिनती 20:23-25 और 28

23-यहोवा ने एदोम के सिवाने के पास होर पहाड़ पर मूसा और हारून से कहा,

24-"हारून अपने लोगों के पास इकट्ठा किया जाएगा। वह उस देश में प्रवेश न करेगा जो मैं इस्राएलियों को देता हूं, क्योंकि तुम दोनों ने मरीबा के जल के पास मेरी आज्ञा के विरुद्ध बलवा किया था।

25-हारून और उसके पुत्र एलीआजर को ले जाकर होर पहाड़ पर चढ़ना।

28-मूसा ने हारून के वस्त्र उतार कर उसके पुत्र एलीआजर को पहिना दिए। और हारून वहीं पहाड़ की चोटी पर मर गया। तब मूसा और एलीआजर पहाड़ से नीचे उतर आए।

-पहाड़ की चोटी पर हारून मर गया।

-क्या हारून ने कनान देश में प्रवेश किया?

-नहीं।

-क्यों नहीं?

-क्योंकि हारून ने परमेश्वर की अवज्ञा की।

-क्या परमेश्वर ने अपना वचन रखा?

-हां।

-परमेश्वर हमेशा अपना वचन रखते हैं।

-हारून का स्थान मुख्य याजक के रूप में किसने ग्रहण किया?

-हारून का पुत्र एलीआजर।

-कुछ समय बाद, इस्राएलियों ने फिर से शिकायत की।

आइए पढ़ें गिनती 21:4-5

4-इस्राएलियों ने होर पर्वत से लाल समुद्र के मार्ग में एदोम के चारों ओर जाने को कूच किया। परन्तु लोग मार्ग में अधीर हो उठे;

5-और उन्होंने परमेश्वर और मूसा के विरोध में बातें की, और कहा, तुम हमें मिस्र से जंगल में मरने के लिए क्यों लाए हो? रोटी नहीं है! पानी नहीं है! और हम इस दयनीय भोजन से घृणा करते हैं!"

-हालाँकि परमेश्वर ने इस्राएलियों को पानी दिया था, फिर भी इस्राएली शिकायत करते रहे।

-क्योंकि इस्राएली शिकायत करते रहे, तो परमेश्वर ने उनके साथ क्या किया?

आइए पढ़ें गिनती 21:6

6 तब यहोवा ने उनके बीच जहरीले सांप भेजे; उन्होंने लोगों को काटा, और बहुत से इस्राएली मर गए।

-परमेश्वर ने कई जहरीले सांपों को उनके बीच भेजकर इस्राएलियों को दंडित किया।

-जहरीले सांप हर जगह थे।

-कई इस्राएलियों को सांपों ने काट लिया और मर गए।

-कैसे पाप सांपों की तरह है?

-जैसे साँपों ने इस्राएलियों को डस लिया और वे मर गए, वैसे ही पाप लोगों को डसता है और वे मर जाते हैं।

-क्या इस्राएली जहरीले सांपों से बच पाए थे?

-नहीं।

-क्यों नहीं?

-क्योंकि जहरीले सांप हर जगह थे।

-जब परमेश्वर उन लोगों को दंडित करने का फैसला करता है जो उस पर विश्वास नहीं करते हैं, तो उनके बचने के लिए कोई जगह नहीं है।

-नूह के दिनों में, क्या नाव के बाहर के लोगों के लिए बचने का कोई स्थान था?

-नहीं।

-सदोम और अमोरा के दिनों में क्या नगरों के भीतर रहने वालों के बचने का कोई स्थान था?

-नहीं।

-क्या लूत की पत्नी के लिए बचने का कोई स्थान था जब उसने सदोम और अमोरा को पीछे मुड़कर देखा?

-नहीं।

-जब परमेश्वर उन लोगों को दंडित करने का फैसला करता है जो परमेश्वर में विश्वास नहीं करते हैं, तो उनके बचने के लिए कोई जगह नहीं है.

-जब बहुत से इस्राएली मर गए, तो शेष इस्राएलियों ने क्या किया?

आइए पढ़ें गिनती 21:7

7-लोगों ने मूसा के पास आकर कहा, जब हम ने यहोवा और तेरे विरुद्ध बातें कीं, तब हम ने पाप किया। प्रार्थना करो कि यहोवा साँपों को हम से दूर करे।" इसलिए मूसा ने लोगों के लिए प्रार्थना की।

-क्या इस्राएलियों ने अपना पाप स्वीकार किया?

-हां।

-क्या इस्राएलियों ने मूसा और परमेश्वर से उनकी सहायता करने को कहा?

-हां।

-क्या इसराएली खुद को सांपों से बचाने में कामयाब रहे?

-नहीं।

-क्या मूसा इस्राएलियों को सांपों से बचाने में सक्षम था?

-नहीं।

-एकमात्र कौन था जो इस्राएलियों को साँपों से बचाने में सक्षम था?

-परमेश्वर।

-क्या परमेश्वर ने इस्राएलियों की मदद की?

आइए पढ़ें गिनती 21:8-9

8-यहोवा ने मूसा से कहा, एक सांप बनाकर डंडे पर खड़ा कर; जिसे काटा जाता है, वह उसे देख कर जीवित रह सकता है।"

9-तब मूसा ने काँसे का एक साँप बनाया और उसे खम्भे पर खड़ा किया।

-इस्राएलियों को बचाने के लिए परमेश्वर ने मूसा से क्या करने को कहा?

-पीतल का साँप बनाना, और उसे डंडे पर रखना।

-यदि इस्राएलियों को मृत्यु से बचाना है, तो उन्हें क्या करना चाहिए?

-पोल पर लगे पीतल के सांप को देखें।

आइए पढ़ें गिनती 21:9ब

9 फिर जब किसी को सांप ने डस लिया, और पीतल के सांप को देखा, तो वह जीवित रहा।

-क्या वे इस्राएली जिन्होनें खम्भे पर पीतल के सांप को देखा था, जीवित रहे?

-हां।

-अगर इसराएलियों ने प्रार्थना की होती लेकिन सांप को नहीं देखा होता, तो क्या परमेश्वर उन्हें बचाते?

-नहीं।

-यदि इस्राएलियों ने परमेश्वर को बलि चढ़ायी होती, परन्तु साँप की ओर न देखा होता, तो क्या परमेश्वर उन्हें बचाता?

-नहीं।

-बचाने के लिए, इस्राएलियों को केवल वही मानना था जो परमेश्वर ने कहा था।

-बचाने के लिए इस्राएलियों को केवल परमेश्वर के मार्ग का अनुसरण करना था।

-बचाने के लिए इस्राएलियों को केवल डंडे पर लगे सांप को देखना था.

-क्या पीतल के साँप में इस्राएलियों को बचाने की शक्ति थी?

-नहीं।

-इस्राएलियों को बचाने की शक्ति अकेले किसके पास थी?

-परमेश्वर।

-परमेश्वर ने उन सभी इस्राएलियों को बचाया जिन्होंने डंडे पर पीतल के सांप को देखा था।

-क्या इस्राएलियों के पाप ने मृत्यु को पुकारा?

-हां।

- भले ही इस्राएलियों के पाप ने मृत्यु का आह्वान किया, लेकिन परमेश्वर ने सांप को देखने वालों के लिए क्या किया?

-परमेश्वर ने उन्हें बचा लिया।